

वन वाटर एप्रोच

प्रलिमिन्स के लिये:

गरे इंफ्रास्ट्रक्चर, ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर, बाढ़ संरक्षण, जलभृत पुनर्भरण/एक्वीफर रचिअरज, एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन ।

मेन्स के लिये:

वन वाटर एप्रोच और इसकी आवश्यकता क्यों है ।

चर्चा में क्यों?

संयुक्त राष्ट्र ने अनुमान लगाया है कविर्ष 2050 तक चार अरब लोग जल की कमी से गंभीर रूप से प्रभावति होंगे, जसिसे जल के सभी स्रोतों की ओबन वाटर एप्रोच को बढ़ावा मल्लिगा ।

वन वाटर एप्रोच:

परचिय:

- वन वाटर एप्रोच जसिसे **एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन (IWRM)** के रूप में भी जाना जाता है, यह मानता है कजिल मूल्यवान है, चाहे उसका स्रोत कुछ भी हो ।
 - इसमें पारसिथतिकि और आर्थिकि लाभ के लिये समुदायों, व्यापारी, उद्योगों, कसिानों, संरक्षणवादियों, नीत निर्माताओं, शकिषावदियों और अन्य को शामिल करके एकीकृत, समावेशी, टकिाऊ तरीके से उस स्रोत का प्रबंधन करना शामिल है ।
 - यह समुदाय और पारसिथतिकि तंत्र की जरूरतों को पूरा करने के लिये दीर्घकालिक लचीलापन और वशि्वसनीयता हेतु सीमति जल संसाधनों के प्रबंधन के लिये एकीकृत योजना एवं कार्यान्वयन दृष्टकिोण है ।
 - वन वाटर एप्रोच जल उद्योग के भवषिय के लिये आवश्यक है, जब पारंपरिक रूप से अपशषिट जल, वर्षा जल, पेयजल, भूजल और इनके पुनः उपयोग को बाधति करने वाली बाधाएँ समाप्त हो जाती हैं और जल का अनेक लाभों के साथ उपयोग कयिा जा सकता है ।

वशिषताएँ:

- संपूर्ण जल मूल्यवान है:** इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक है कहिहमारे पारसिथतिकि तंत्र में मौजूद जल संसाधनों से लेकर पीने हेतु जल, अपशषिट जल और वर्षा जल आदि संपूर्ण जल मूल्यवान है ।
- बहुआयामी दृष्टकिोण:** जल से संबंधति नविश आर्थिकि, पर्यावरणीय और सामाजिकि लाभ प्रदान करना चाहयि ।
- वाटरशेड-सकेल थकिगि एंड एक्शन का उपयोग:** इसके माध्यम से कसिी कषेत्र के प्राकृतिकि पारसिथतिकि तंत्र, भूवज्जान और जल वज्जान का प्रबंधन कयिा जाना चाहयि ।
- भागीदारी और समावेशन:** वास्तवकि प्रगत और उपलब्धयिँ तभी प्राप्त होंगी जब सभी हतिधारक एक साथ आगे आकर इस संबंध में नरिणय लेंगे ।

उद्देश्य:

- वशि्वसनीय, सुरकषति, स्वच्छ जल की आपूर्ति
- जलभृत पुनर्भरण
- बाढ़ संरक्षण,
- पर्यावरण प्रदूषण को कम करना
- प्राकृतिकि संसाधनों का कुशल और पुनः उपयोग
- जलवायु के लिये लचीलापन
- दीर्घकालिकि स्थरिता
- सुरकषति पेयजल के लिये समानता, सामर्थ्य और पहुँच
- आर्थिकि वृद्धि और समृद्धि



वाटर एप्रोच की आवश्यकता:

- क्षेत्रीय जल उपलब्धता, मूल्य निर्धारण और सामर्थ्य में अंतर, आपूर्ति में मौसमी एवं अंतर-वार्षिक भिन्नता, जल की गुणवत्ता तथा मात्रा, संसाधनों की अवशिवसनीयता बड़ी चुनौतियाँ हैं।
- पुराने बुनियादी ढाँचे, आपूर्ति-केंद्रित प्रबंधन, प्रदूषित जल निकाय, खपत और उत्पादन पैटर्न में बदलाव के बाद कृषि और औद्योगिक विस्तार, बदलती जलवायु एवं जल का असमान वितरण भी नई जल तकनीकों को बढ़ावा देता है।
- वैश्विक स्तर पर 31 देश पहले से ही जल की कमी का सामना कर रहे हैं और वर्ष 2025 तक 48 देशों द्वारा गंभीर रूप से जल की कमी का सामना किये जाने की आशंका है।
- जल की कीमत को पहचानना, मापना और व्यक्त करना तथा उसे नरिणय लेने में शामिल करना अभी भी जल की कमी के अलावा एक चुनौती है।

IWRM पारंपरिक जल प्रबंधन से बेहतर:

- पारंपरिक जल प्रबंधन दृष्टिकोण में पेयजल, अपशिष्ट जल और वर्षा जल को अलग-अलग प्रबंधित किया जाता है, जबकि 'वन वाटर' में सभी जल प्रणालियों को स्रोत की परवाह किये बिना जानबूझकर और जल, ऊर्जा तथा संसाधनों के लिये सावधानीपूर्वक प्रबंधित किया जाता है।
- आपूर्ति से उपयोग, उपचार और नपिटान के लिये एकतरफा मार्ग के विपरीत IWRM में जल का कई बार पुनर्नवीनीकरण और पुनः उपयोग किया जाता है।
- जल की कमी को दूर करने, भूजल को रचिरज करने और प्राकृतिक वनस्पतिका समर्थन करने के लिये वर्षा के जल का उपयोग एक मूल्यवान संसाधन के रूप में किया जाता है।
- जल प्रणाली में ग्रे और ग्रीन **इंफ्रास्ट्रक्चर** का मशिरण शामिल है जो परंपरागत जल प्रबंधन में ग्रे अवसंरचना की तुलना में एक संकर प्रणाली बनाते हैं।
 - ग्रे इंफ्रास्ट्रक्चर से तात्पर्य बाँध, समुद्र सेतु, सड़क, पाइप या जल उपचार संयंत्र जैसी संरचनाओं से है।
 - ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर प्राकृतिक प्रणालियों को संदर्भित करता है जिसमें वन, बाढ़ के मैदान, आर्द्रभूमि और मटिटी शामिल हैं जो मानव कल्याण के लिये अतिरिक्त लाभ प्रदान करते हैं, जैसे बाढ़ सुरक्षा और जलवायु वनियमन।
- उद्योग, एजेंसियों, नीति निर्माताओं, व्यापारियों और वभिन्न हतिधारकों के साथ सक्रिय सहयोग 'वन वाटर' एप्रोच में एक नयिमति अभ्यास है, जबकि सहभागिता पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणालियों में आवश्यकता-आधारित है।

आगे की राह

- संयुक्त राष्ट्र वशिव जल विकास रिपोर्ट 2021 के अनुसार, जल को उसके सभी रूपों में महत्त्व देने में वफिलता को जल के कुप्रबंधन का एक प्रमुख कारण माना जाता है।
- जल संसाधनों के एक व्यापक, लचीले और टिकाऊ प्रबंधन के लिये सगिल-माइंडेड और रैखिक जल प्रबंधन से बहु-आयामी एकीकृत जल प्रबंधन दृष्टिकोण, यानी 'वन वाटर' एप्रोच पर ध्यान केंद्रित करना।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्षों के प्रश्न:

प्रलमिसः

Q. 'एकीकृत जलसंभर वकिस कर्यकरुड' कु कुर्यरनुवतल करने के कुर्य लरड है?

1. डुदर अडवररह की रुकुथरड
2. देश की डररहडरसी नदरररुं कु डुसडी नदरररुं से कुडुनर
3. वरुषर-कुल संगुरहण तथर डुडड-कुलसुतर कर डुनररुडरण
4. डुररकृतकल वनसुडतरररुं कर डुनररुडनन

नीके दररु डररु कूड कर डुरडुग कर सही उतुतर कुनररुडः

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2, 3 और 4
- (c) केवल 1, 3 और 4
- (d) 1, 2, 3 और 4

उतुतरः (c)

वर्यरखुडरः

- एकीकृत वरटरशुड/कुलसंभर वकिस कर्यकरुड (IWDP) गुररडीण वकिस डनुतररलड के डुडडसंसरधन वडुडरग दरररर कुर्यरनुवतल कुररुड डरतर है ।
- IWDP कर डुखुड उदुदेशुड डुदर, वनसुडतल अवररण और कुल जैसे अवकुरडडतल डुररकृतकल संसरधनुं कर दुहन, संरकुषण और वकिस करके डररसुथतलकल संतुलन कु डुनः डुररडुत करनर है । अतः कथन 1, 3 और 4 सही है ।
- डरलरुं कडु देश की डररहडरसी नदरररुं कु डुसडी नदरररुं से कुडुने कर कुर्य वरटरशुड वकिस कर्यकरुड के तहत नही कुररुड डरतर है । अतः कथन 2 सही नही है ।

अतः वकलडु (c) सही है ।

डेनुसः

Q. डररत के सुखरगुरसुत और अरुदुध-शुषुक कुषुतुररुं डुं सुुकुषुड कुलसंभर वकिस डररुडुडनरुं कसल डुरकर कुल संरकुषण डुं सडरडतर कररती है? (2016)

सुरुतः डरडन टु अरुथ

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/one-water-approach>